Vol. 6, Issue. 1, (January 2017) pp. 36-39 Sangeet Galaxy
ISSN: 2319-9695

पहाड़ का चैती गायन : ऋतु के रंग, रोमांच और उदासी के स्वर

डॉ.पंकज उप्रेती
एसि0 प्रोफेसर, विभाग प्रभारी संगीत
रा0स्नातकोत्तर महाविद्यालय बेरीनाग (पिथौरागढ़) उत्तराखण्ड
Email- editorpighaltahimalay@gmail.com
Website - www.pighaltahimalay.com

विश्व के लोक में अनगिनत गीतों की गूंज सुनने को मिलती है और इनकी अनेकों शैलियां हैं। अवसर विशेष पर गाये जाने वाले गीतों के अलावा मनोरंजन के लिये मंचीय प्रस्तुतियों के सैकड़ों प्रकार जगत में है, जिसमें कई बार शैलियों कें सूक्ष्म अन्तर से ही पहचान होती है। लोक में तो सामूहिक रूप से नृत्यगीत ज्यादा होते हैं। इसके अलावा एकल गायन के गीतों में आलाप की सी रंगत होती है जो सुनने और समझने वाले श्रोता को भावविभोर कर देती है। किसी ग्राम, अंचल, क्षेत्र विशेष की बोली–भाषा के कारण यदि वह गीत समझ में नहीं भी आता हो तो उसमें लगने वाले स्वर और उसकी भाव प्रधानता हमें महसूस करा देती है कि गायन करने वाला क्या कह रहा है। साथ ही लगने वाले स्वरों से उत्पन्न रस हमें भावविभोर करता है। सामान्यता लोक से उपजे गीतों में प्रकृति और मौसम का प्रभाव है, इस आधार पर इनको वर्गीकृत किया जा सकता है। वर्गीकरण के एक वर्ग में चैती गायन भी है जिसमें ऋतु के रंग, रोमांच और उदासी के स्वर गूंजते हैं। भारतवर्ष में चैती गायकी का अद्‌भुत प्रचलन है। होली के बाद जब चैत का महीना आरम्भ होता है, तब 'चैती' गाई जाती है। प्रभूलाल गर्ग 'बसंत' प्रबन्ध गायन की शैलियों का उल्लेख करते हुए बताते हैं– ''इसके गीतों में भगवान राम की लीलाओं का वर्णन रहता है। पूर्व बिहार की ओर इसका प्रचार अधिक है। इसमें अधिकतर पूर्वी भाषा का प्रयोग होता है।''[1] चैती की कर्णप्रिय प्रस्तुतियां शास्त्रीय संगीत के मंचों पर भी सुहा रही हैं। ठुमरी गायक इस शैली की बेहतर प्रस्तुति देते हुए सुने गये हैं।

जब हम पहाड़ की चैती गायकी के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन करते हैं तो हमें इसमें ऋतु के रंग, रोमांच और उदासी के स्वर स्पष्ट सुनाई देते हैं। 'चैती' गायन की चर्चा से पूर्व पर्वतीय प्रदेश उत्तराखण्ड के लोक गीतों के वर्गीकरण पर विचार कर लेते हैं, जिससे पता चल जायेगा कि यहाँ की प्रकृति और मौसम के आधार पर विद्वतजनों ने गीतों को कैसे विभाजित किया है और 'चैती' एक पृथक गायन शैली है। लोक संस्कृति के विद्वान डॉ.त्रिलोचन पाण्डेय ने मुक्तक और सम्वाद प्रधान गीतों के रूप में लोक गीतों का वर्गीकरण किया है। सम्वाद प्रधान गीतों में– अनिवार्य गीत, विशेष गीत, ऋतु गीत, कृषि, देवी–देवताओं, व्रत–त्यौहार, वालगीत रखे हैं।[2] लोक गीतों के अध्येत्ता कृष्णानन्द जोशी ने सात वर्गों में लोक गीतों को रखते हुए ऋतु गीत का वर्णन किया है।[3] डॉ.भवानीदत्त उप्रेती ने भी सात वर्गों में गीतों का विभाजन करते हुए ऋतु गीतों के बारे में पृथक से बताया है।[4] डॉ.गोविन्द चातक ने अपने अध्ययन में ऋतु गीतों के अन्तर्गत बसन्ती, चैती, झुमैलो, खुदेड़, बाराहमासी, होली का उल्लेख किया है।[5] डॉ.मोहनलाल बाबुलकर ने लोकगीतों का वर्गीकरण आठ भाग में प्रस्तुत करते हुए ऋतु सम्बन्धी गीतों में विरह गीत बात कही है।[6] डॉ. हरिदत्त भट्‌ट 'शैलेश' ने लोकगीतों का वर्गीकरण उसकी शैली, विषय और रस की दृष्टि से किया है।[7] डॉ. शिवानन्द नौटियाल के वर्गीकरण में बसन्ती, बारहमासा, चौमासा, होली इत्यादि प्रकार हैं।[8] लोक संस्कृति के प्रकाण्ड डॉ.देवसिंह पोखरिया ने भी लोकगीतों का वर्गीकरण करते हुए अन्त में कहा है कि सम्पूर्ण उत्तराखण्ड के लोकगीतों का सूक्ष्म वर्गीकरण जटिल है।[9] सचमुच लोकगीतों की सीमारेखा अनन्त है। इसलिये अध्ययन की सुविधा के लिए इसे दो प्रकार से प्रस्तुत किया जा सकता है– मुक्तक गीत और प्रबन्ध गीत।[10]

अध्ययन से पता चलता है कि सभी प्रकार के वर्गीकरणों में ऋतु गीतों को पृथक से स्थान दिया गया है। इसके अन्तर्गत प्रत्येक ऋतु से जुड़े गीत हैं। जैसे– बसन्त गीतों के अन्तर्गत कुमाऊँ में बसन्त के गीत और गढ़वाल में बासन्ती (थड्या), झुमैलो गीत गाया जाता है। उत्तराखण्ड के कुमाऊँ और गढ़वाल दोनों ही पहाड़ी क्षेत्रों में होली के गीतों का प्रचलन है।

ऋतुरैण भी मौसमी गीत है। इसे 'चैतू' भी कहते हैं। यह किसी भी ऋतु का गीत हो सकता है लेकिन नववर्ष आगमन पर इसके गायन की परम्परा है।[11] यह गायकी अब विलुप्ति होने को है क्योंकि परम्परागत रूप से इसका गायन करने वाले कलाकारों की संख्या बहुत ही कम बची है और वह भी अब उनके परिजन इस गायकी के बजाय अन्य पेशों को अपनाते जा रहे हैं।[12] बारहमासा भी ऋतु गीत है जिसे चैत मास में गाया जाता है, इसमें बारह महीनों का वर्णन आता है। इसी प्रकार चौमासा और छःमासा भी हैं। अलग–अलग महीनों के वर्णन में उनका प्रभाव और विरही स्वर का संगम इनमें होता है। इसी प्रकार से चैती गायन भी एक प्रकार है, जिसे चैत मास में गाया जाता है। गढ़वाल में गाई जाने वाली चैती का उदाहरण प्रस्तुत है–

''वो दान्यो मा को दानी राजा बली दानी
वो दान्यो मा को दानी राजा बली बतैद
वे दान्यो मा को दानी छ कर्ण दानी
कश्यप रिषि का हिरणकस्यप ह्वेन राजा बली दानी।
हिरणकंस को जब भगत ह्वैगे परिलाद राजा बली दानी।
बिलोचन को बेटा राजा बिलोचन ह्वैन राजा बली दानी..... ।''[13]

(दानवीरों में राजा सबसे बड़े दानी हुए, कर्ण भी दानियों में श्रेष्ठ हुए। कश्यप ऋषि हिरण्यकश्यप के पुत्र प्रहलाद के बिलोचन और बिलोचन के पुत्र बली हुए।.....)

गढ़वाल में परम्परागत रूप से गाये जाने वाले इन गीतों को कुलाचार कहा जाता है। औजी ढोल की संगत में घर–घर चैत गाते हैं और घर–परिवार की समृद्धि की कामना करते हैं। एक प्रस्तुति–

''मंगलाचार मंगलाचार बड़ा सरकार बड़ा दरवार।
राज मुहल्ली राज मुसद्दी, जुग–जुग जीवै राजाधिराजा
माराज बोलाँदा बद्रनीनाथ जै जै कार जै जै कार
पूरबी पश्चिमी घाट को राज बढ़े,
उत्तरी दक्षिणी घाट को राज बढ़े,
बेटी बेटान को राज बढ़े, नाती पूतान को राज बढ़े,
कुल का दिव्वा सब पर नेह करें..... ।''[14]

कुमाऊँ में प्रचलित एक ऋतुरैण का उदाहरण जिसमें विवाहिता बिन्दी, हँसुली और नथ इत्यादि आभूषण माँग रही है ताकि अपने मायके जा सके–

''कोर काकड़ बणायो रैत, लागे म्हैण रंगीलो चैत।
ओ लागो म्हैण रंगीलो चैत, ल्यावौ धैं बिन्दुलि मैं जानूँ मैत।
ल्यावौ धैं हँसुलि मैं जानूँ मैत, ल्यावौ धैं नथुलि मैं जानूँ मैत।
ओ लागे म्हैण रंगीलो चैत।''[15]

व्यवहार में यदि हम देखें तो पहाड़ की चैती गायकी अब विलुप्ति के कगार पर खड़ी है। चूंकि परम्परागत रूप से चैती गायन वाले चैत मास के अवसर पर घर–घर जाकर इसे गाते थे, वह सिमटते जा रहे हैं। पहले समय में आवश्यकताएं कम थीं, मनोरंजन के साधन भी कम थे, ऐसे में पीढ़ी दर पीढ़ी

चैती व गायन की ऐसी ही अन्य विधाओं को जानने वाले सक्रिय थे। ग्रामीणों द्वारा इन्हें सम्मानित भी किया जाता था। वस्त्र, अनाज व अन्य सामाग्री देकर सहयोग भी किया जाता था। बदलते परिवेश में आवश्यकताएं बढ़ती जा रही हैं और परम्परागत रूप से चैती गायन करने वाले गिने–चुने ही घरों में जाकर सुनाते हैं, नई पीढ़ी अन्य कार्यों–रोजगार में लग गई है।

गंगोलीहाट के महाकाली दरवार पैदल मार्ग पर और हुड़क्यूड़ा ग्राम में चैती व ऋतु गायन करने वाले परिवार हुआ करते थे, नई पीढ़ी इससे अनभिज्ञ है। लेखक ने इन ग्रामों के अतिरिक्त पतारबाड़ा में जाकर अध्ययन के दौरान देखा कि नई पीढ़ी लोक गायकी की विभिन्न विधाओं को विसरा चुकी है और पहाड़ के लोक संगीत के नाम पर चलताऊ गीतों को सुन व गा रही है।[16] पिथौरागढ़ जनपद के बेरीनाग तहसील में ग्राम काण्डे के लोक कलाकार पनीराम परम्परागत रूप से चैती गाने वाले हैं लेकिन वर्तमान में उन्होंने भी इधर–उधर जाकर चैती गाना बन्द कर दिया है। दादा रुद्रराम, पिता गुलाबराम व अन्य लोगों से जागर व चैती गायकी सीखे हुए 72 वर्षीय पनीराम के शिक्षित पुत्र राजन, गोपाल, महिपाल भी लोकसंगीत की कई विधाओं को जानते हैं लेकिन चैती गायकी नहीं जानते। इससे भी सिद्ध हो जाता है कि चैती के सुनने और सुनाने वाले पुराने अंदाज अब नहीं हैं। बातचीत के दौरान पनीराम ढोलकी के साथ चैती गाते हैं–

''ऋतु औंछे पलटि बरस का दिना
ज्यूना भागी जी रौला,
सौभागी सुणला बरस की ऋतु.....
मालो जानी गबड़ी पलटी आला,
खेवी जानी मौनू पलटी आला,
चैतोलिया मासा भाई भिटोली आला।
जाको न छि भाई, कौ भिटोली आला,
दैराणी–जैठाणी का भाई भिटौली आला,
गोरीधना रौतेली, कौ भिटौली आला,
छाजा बैठी गोरी आँसुवा ढोललि.....।

इसमें चैत मास का वर्णन करते हुए गायक कहता है वर्ष में यह ऋतु भी अपने समय से आयेगी, सभी राजीखुशी रहें, सौभाग्यवती सुनेंगी, भाबर जाने वाले ग्रामीण लौट आयेंगे जैसे मधुमक्खी रस लेकर अपने स्थान पर लौट आती है। इस वर्णन में गायक आगे कहता है– चैत के मास में भाई मिलने आयेगा। बहुत ही कारुणिक वर्णन इसमें है जब वह कहता है– गोरीधना का तो भाई ही नहीं है, कौन भिटौली लेकर आयेगा। वह छज्जे में बैठकर आँसु गिरायेगी।

चैती का यह वर्णन बहुत लम्बा है। जिसमें आगे बताया गया है कि गोरीधना का भाई नहीं था। उसके विवाह के उपरान्त घर में एक भाई हुआ, जो बाद में उसके लिये भिटौली लेकर आया। इस प्रकार ऋतु के रंग, रोमांच के साथ करुण रस के स्वरों को घोलता हुआ चैती गीत गाया जाता है।[17] यहाँ पड़ौस के ग्राम बैठोली के दलीराम और ग्राम उड्यारी के चनरराम भी चैती के अच्छे जानकारों में से रहे हैं। इनके परिजन चैती गायकी नहीं करते हैं।

पहाड़ (उत्तराखण्ड) में चैती गायन की विलुप्त होती परम्परा को संरक्षित करने की दिशा में ठोस पहल जरूरी है। उत्तराखण्ड सरकार के संस्कृति मंत्रालय द्वारा कला व कलाकारों के संरक्षण की दिशा में कार्य किये जा रहे हैं तथापि इस प्रकार की परम्परागत गायकी को तभी बचाया जा सकता है जब यहाँ के ग्राम्य जीवन में घुले रस/स्वरों को समझने–बूझने वाले सक्रिय होंगे।

सन्दर्भ–

1. संगीत विशारद, संगीत कार्यालय हाथरस उ.प्र.(भारत), सन् 1999, पृष्ठ– 239
2. कुमाऊँ का लोक साहित्य, डॉ.त्रिलोचन पाण्डेय, पृष्ठ– 74
3. कुमाऊँ का लोक साहित्य, डॉ.कृष्णानन्द जोशी, पृष्ठ– 13
4. कुमाउनी लोक साहित्य तथा गीतकार, डॉ.भवानीदत्त उप्रेती पृष्ठ– 16
5. गढ़वाली लोकगीत एक सांस्कृतिक अध्ययन, डॉ.गोविन्द चातक, पृष्ठ– 45
6. गढ़वाली लोक साहित्य का विवेचनात्मक अध्ययन, डॉ.मोहन लाल बाबुलकर पृष्ठ– 21
7. गढ़वाली भाषा और उसका साहित्य, डॉ.हरिदत्त भट्ट, पृष्ठ– 141–142
8. गढ़वाल के लोकनृत्यगीत, डॉ.शिवानन्द नौटियाल, पृष्ठ– 42
9. कुमाउनी लोकगीत, डॉ.देवसिंह पोखरिया, पृष्ठ– 128
10. उत्तरांचल के लोक गीतों का साहित्यिक एवं गीतात्मक अध्ययन, शोध प्रबन्ध डी.लिट् कु0वि0वि0, डॉ.पंकज उप्रेती, सन् 2010, पृष्ठ– 105
11. वही, पृष्ठ– 104
12. संगीत, फरवरी 2011, डॉ.पंकज उप्रेती, आपके अपने स्वर
13. गढ़वाल के लोक नृत्यगीत, डॉ.शिवानन्द नौटियाल, पृष्ठ– 343
14. श्री प्रेम हिन्दवान (ढोल वादक), निवासी जोशीमठ, चमोली से वार्ता के आधार पर।
15. कुमाउनी भाषा और उसका साहित्य, डॉ.त्रिलोचन पाण्डेय, पृष्ठ– 209
16. उत्तराखण्ड के पिथौरागढ़ जिले में स्थित गंगोलीहाट क्षेत्र, जो महाकाली मन्दिर दरवार के कारण विश्वप्रसिद्ध है और यहाँ पहले से कई मिरासी परिवार लोक गायकी में सक्रिय रहे हैं।
17. 2 सितम्बर 2016 को लोक कलाकार व ढोल वादक पनीराम, उनके पुत्र राजेन्द्र व ग्रामीणों के साथ लेखक ने वार्ता की।